सवाल करने का हक

रमेश थानवी

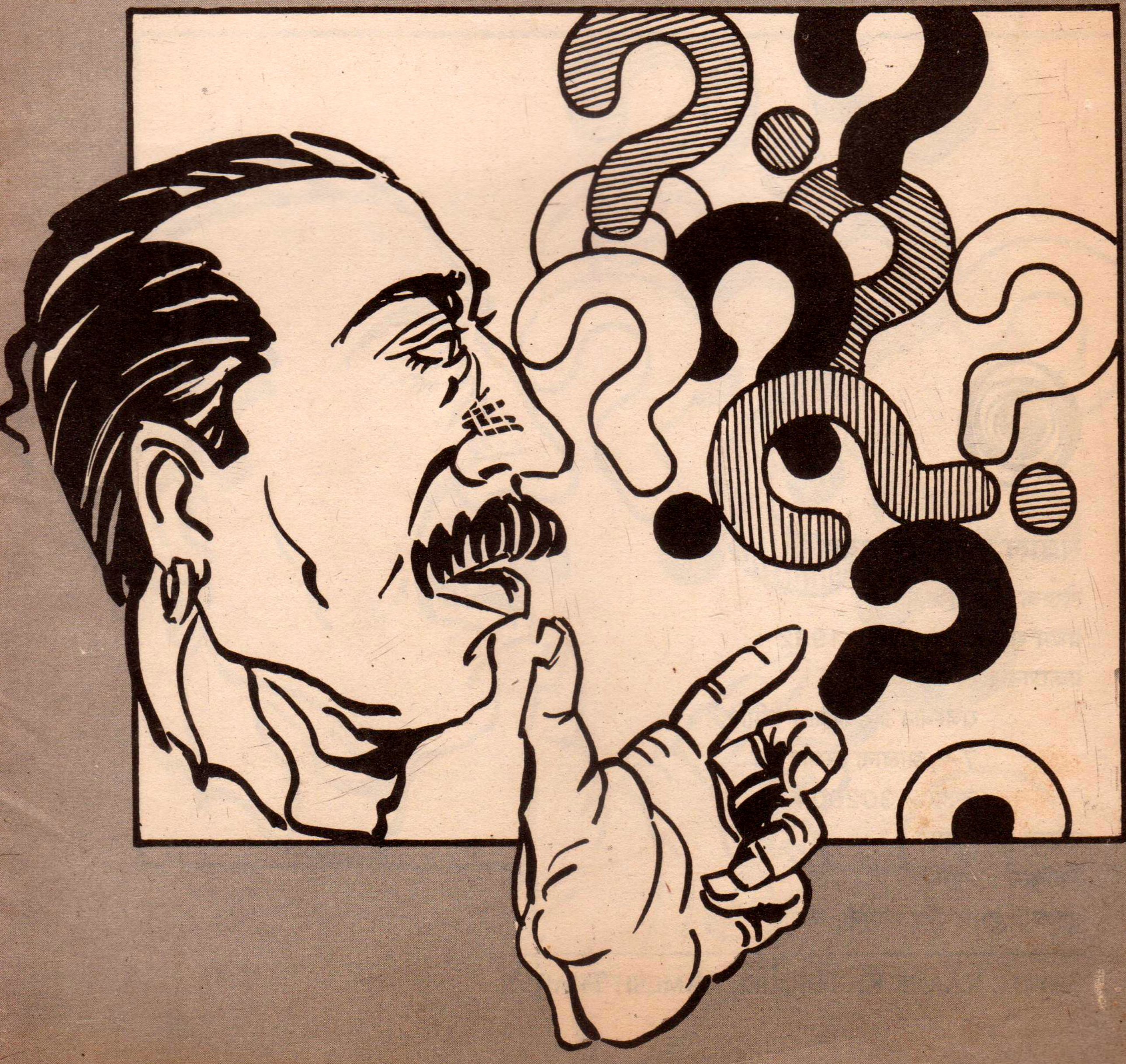

सवाल करने का हक

लेखक : रमेश थानवी

प्रथम संस्करण : फ़रवरी, 1992

प्रकाशन : राज्य संदर्भ केंद्र
राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7-ए, झालाना संस्थान क्षेत्र
जयपुर - 302004

कीमत : चार रुपये

रेखांकन : सारंग

मुद्रक : कुमार एण्ड कम्पनी, जयपुर

SAWAL KARNE KA HAQUE : RAMESH THANVI

सवाल करने का हक

रमेश थानवी

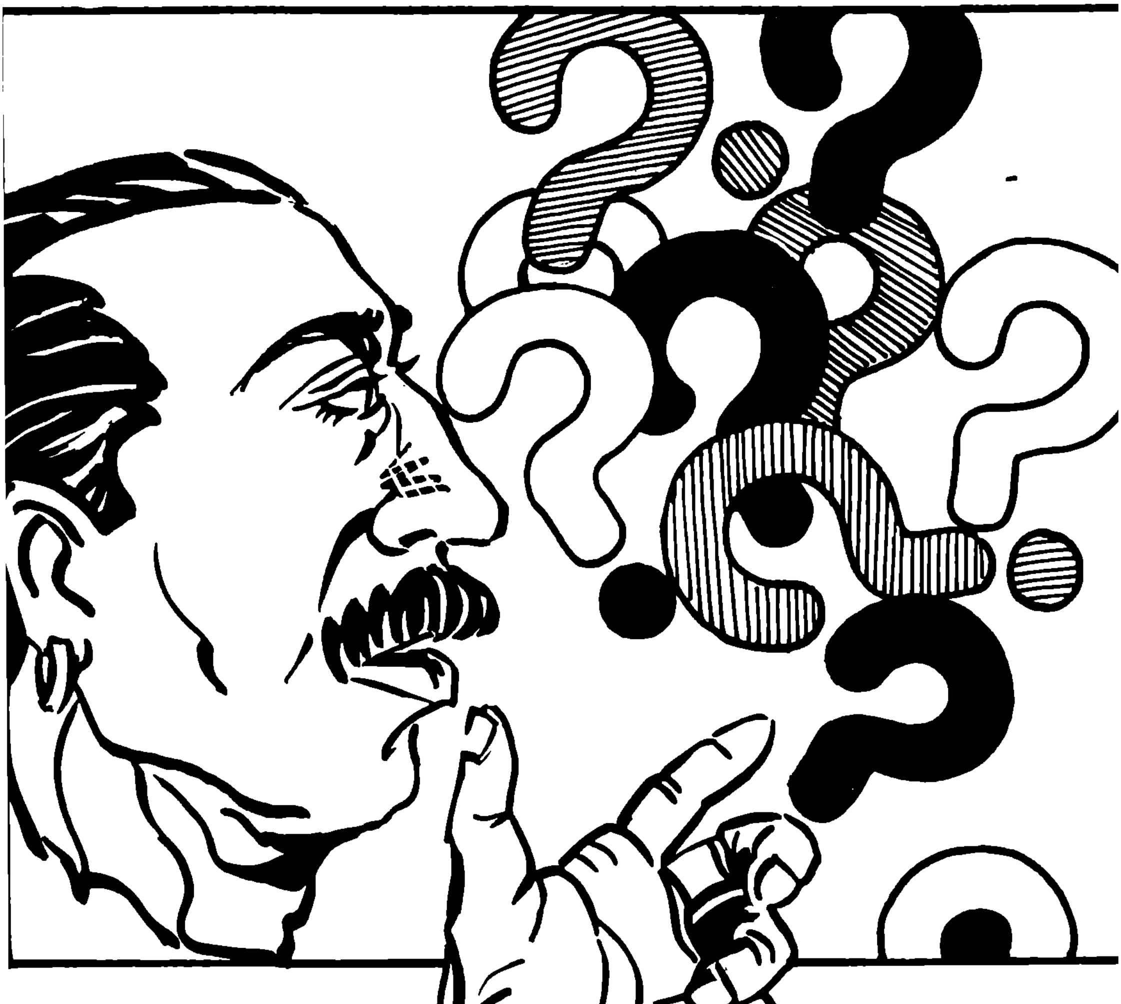

सवाल करने का हक

रात बीती थी। सवेरा हुआ था। सूरज उगा था। रामू जागा था।

रामू उठा था। काम पर चला था। दिन भर काम करता रहा था। थका हारा घर लौटा था। आज का दिन फिर बीत गया था।

शाम आज भी आयी थी। अंधेरा फिर आया था। रामू फिर सोया था। सवेरा फिर हुआ था। रामू ने करवट ली। रामू जागा था। उठा था। उसके पांव उठे थे। काम पर चल दिये थे। उसकी मेहनत ने मेड़ बांधी थी। खेत की डोली बांधी थी। दिन फिर बीत गया था। थका रामू घर लौट आया था।

रामू का घर किसान का घर था। एक खेत-मजूर का घर। छोटे मजूर का घर। माटी और घास-फूस का बना घर, मगर मेहनत और हिम्मत पर टिका घर।

घर में थे बीबी, चार बच्चे और आंगन में उगा नीम का पेड़। बाहर अहाते में बंधी खड़ी थी एक बकरी। इनके साथ ही रहती थीं कुछ परेशानियां।

गरीबी रामू ने बचपन से देखी थी। वह आज भी गरीब था। थकान और अपमान उसे रोज मजूरी के साथ मिलते थे। उसकी उमर के साथ साये की तरह जुड़ गये थे।

रामू की बीबी इमरती उसका साथ देती थी। दोनों मिलकर गुजारा कर रहे थे। गिरस्थी को चला रहे थे।

रामू की गिरस्थी चल रही थी। कभी

गिट्टी तोड़ता तो कभी तगारी उठाता। जो भी मजूरी मिलती उसी में जुट जाता। मेहनत हर जगह पूरी होती। मजूरी कभी कहीं पूरी नहीं मिलती।

रामू की मेहनत का मोल दूसरे करते। उसकी मजबूरी के कारण मोल हमेशा कुछ कम आंकते। जो भी मिलता, रामू ले लेता। कल के भरोसे में आज चुप रहता। कल भूखे रहने की चिन्ता उसे आज गुलाम बनाती थी।

रामू के बच्चे बड़े होने लगे थे। उसे अपना बचपन याद आने लगा था। एक उदास बचपन, सपनों के सुख

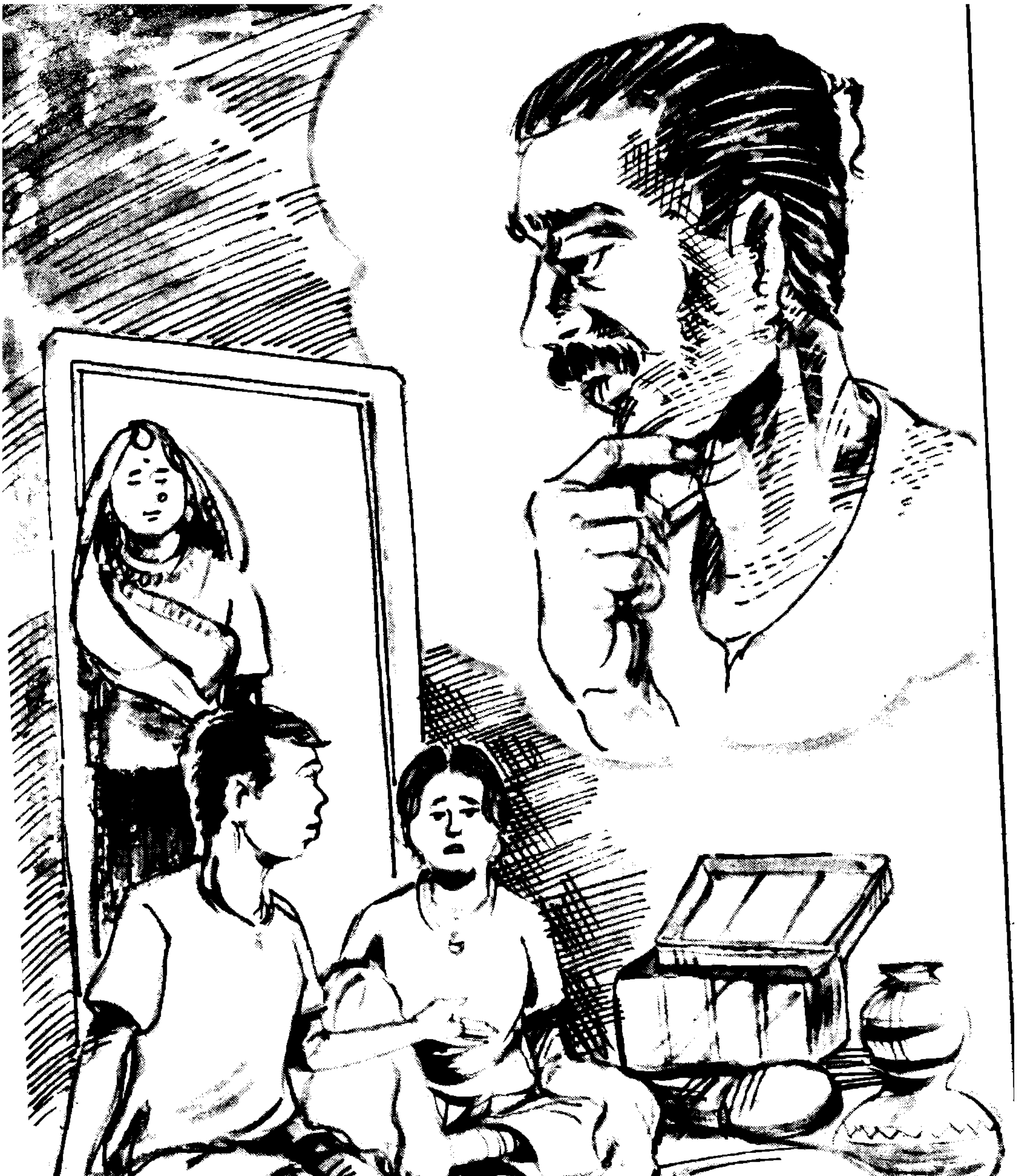

से कटा बचपन। उसे याद आया था कि बच्चों की यह उमर खेलने की उमर होती है। कुछ अच्छे सपने देखने की उमर होती है। सपनों का सुख बच्चों का अपना सुख होता है। रामू पिता था, यह सब जानता था।

रामू यह भी जानता था कि उसने पिता बनकर अब तक बच्चों को कोई हंसी नहीं दी है। खुशी नहीं दी है। अपने बच्चों को कभी मेले में ले जाने और शहर से आये झूले में बिठाने की बात भी रामू सिर्फ सोचता रहा है। मजूरी से लौटता रामू बच्चों के लिए कभी

हाई स्कूल

कभी खट्टी मीठी गोली ले जाने की बात सोचता रहा है। बच्चों ने कभी मिठाई मांगी तो रामू गुड़ से ही उनको बहलाता रहा है। उसे अपने बच्चों के सपने अब सताने लगे हैं।

बच्चों के लिये रामू का प्यार बहुत सच्चा है। रामू बच्चों को प्यार करता है और बच्चे रामू को। इसी प्यार-दुलार के कारण गरीबी कभी बच्चों को अखरी नहीं। उन्होंने कभी किसी कमी की शिकायत अपने पिता से नहीं की।

रामू को उनके कल की चिन्ता है।

वह उनको पढ़ाना लिखाना चाहता है। अपने से कुछ अधिक काबिल बनाना चाहता है। अपनी गुलामी से उनको बचाना चाहता है। ऐसी गुलामी जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। रामू की इस इच्छा में इमरती की इच्छा भी जुड़ गयी है। वह मां है और बच्चों का सुख उसका अपना सुख है। इमरती और रामू ने बच्चों को काबिल बनाने की बात सोची है।

रामू को पढ़ाई पसन्द है लेकिन उसको आज की पढ़ाई पर पूरा भरोसा नहीं रहा। उसको यह विश्वास नहीं रहा

कि हर पढ़ा लिखा आदमी काबिल होता है। उसने यह देखा है कि हर पढ़े लिखे आदमी ने अपना गांव छोड़ा है। रामू ने यह भी देखा है कि शहर से पढ़ लिखकर आये लोग लोगों से बहुत प्यार नहीं करते, मोहब्बत नहीं करते। लोगों से जुड़े बिना ही अपना मतलब सीधा कर चल देते हैं। पढ़े लिखे लोगों की बेईमानी और धोखाधड़ी को खुद रामू ने अपनी कमर पर झेला है। वह जानता है कि आज की पढ़ाई ईमान नहीं सिखाती है। अपनी पूरी मेहनत की मजूरी कम पाने पर रामू समझ जाता है कि पढ़े लिखे

मालिक ने उसके साथ कितना धोखा किया है। रामू तब बहुत दुखी और उदास हो जाता है।

वह सोचता रहता है कि पढ़ाई प्रेम क्यों नहीं सिखाती ? पढ़ाई ईमान और धरम क्यों नहीं सिखाती ? यही सब सोचता रामू अपने बच्चों को अच्छा इंसान बनाने का फैसला करता है। वह फैसला करता है कि बच्चों को स्कूल तो भेजेगा लेकिन प्रेम और ईमानदारी का पाठ बच्चों को घर में पढ़ायेगा। वह इमरती से बात करता है। उसे अपने जीवन के अनुभव

सुनाता है। उसे बताता है कि लोग कितने छोटे हैं, कितने ओछे हैं।

रामू के जीवन की कमाई ही यही है कि उसने बड़े लोगों के ओछेपन को देखा है। उदार कहलाने वाले लोगों की क्रूरता उसने देखी है। दयालु कहलाने वाले लोगों की निर्दयता उसने खुद झेली है। यही रामू की कमाई है कि वह खुद कभी ओछा और निर्दय नहीं बना। उसको नफ़रत बुरी लगती है। प्रेम करना अच्छा लगता है।

इमरती जानती थी कि रामू ने कितना सहा है। उसने हमेशा रामू का साथ

दिया है और दोनों ने मिलकर जमाने को बरदाश्त किया है। इमरती को नफ़रत से भरी यह दुनिया बुरी लगने लगी है। प्रेम अच्छा लगने लगा है।

इमरती ने रामू की बात सुनी थी, मानी थी और अपनी मंजूरी दी थी। दोनों ने मिलकर यह तय किया था कि बच्चों को स्कूल तो भेजेंगे मगर घर में भी उनका पूरा ध्यान रखेंगे। कच्ची माटी को अच्छे संस्कार देना घर का पहला काम है। नींव की मजबूती में उनका भरोसा था और उनका यह फैसला पक्का था। बच्चे स्कूल जाने लगे थे।

रोज रात मां से कहानी सुनकर प्रेम का पाठ पढ़ने लगे थे। मां याद दिलाती थी कि ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय। मां का यह पाठ कभी कहानी के जरिए हिये में उतरता तो कभी किसी गीत के जरिए। हर बार ऐसा लगता जैसे सीखने के सुख से उनको कोई सींच रहा है।

रामू ने देखा था कि इमरती ने बच्चों को पूरी तरह संभाल लिया है।

एक एक कर कई बरस बीत गये थे। रामू को अपने गांव की हालत में बदलाव का इंतजार था। पहले उसने

उम्मीद की थी कि आजादी के बाद गांधी-महात्मा की बात सुनी जायेगी और ऊंच नीच का भेद मिटाकर गांवों में सुराज की स्थापना की जायेगी। रामू को सुराज के सपने जमीन पर उतरते भी दीखे थे, जब सड़क, बिजली और रेल उसके गांव तक पहुंचे थे। लेकिन रामू ने देखा था कि गांवों में भूमिहीन किसानों की गिनती बढ़ रही थी। छोटे जमींदार बड़े जमींदार बन रहे थे।

रामू हैरान था कि दीवार मिटाने के नाम पर नयी दीवारें खड़ी हो रही हैं। ये दीवारें रामू को दुखी करती हैं। उसे

फासले अच्छे नहीं लगते। मगर वह देख रहा था कि- दीवारों से बंटे समाज में भी कोई नफ़रत के बीज बो रहा है। रामू हैरान था कि शिक्षा-दीक्षा के बावजूद भेदभाव बढ़ा है। फलती-फूलती फसलों के बावजूद भूख और गरीबी बढ़ रही है।

रामू को लगा था कि किसी ने पहिये को उल्टा घुमा दिया है।

रामू सोच रहा था कि इस पहिये को उल्टा कौन घूमा सकता है ? उसे समझ में कम आता था। हैरानी अधिक होती थी।

हैरान रामू पहिये की इस उल्टी रफ्तार को खुद भोग रहा था। तन तोड़ते बरस बीत गये थे। माली हालत सुधरने की कोई उम्मीद नज़र नहीं आती थी। कर्ज़ कभी उतरता नहीं था। हमेशा सूद ही चुकता था, मूल जस का तस सिर पर चढ़ा रहता था।

पहिया उल्टा घूम रहा था। रामू की मेहनत का लाभ बड़े घर में जा रहा था। दौलत और सुख सिर्फ एक तरफ सिमट रहे थे। छोटे सेठ बड़े सेठ बन रहे थे। मजूरी बांटने वाले मेट भी मोटे सेठ बन गये थे। जमींदारों के कुत्तों

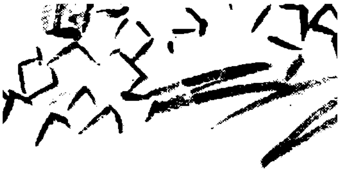

स्पंदन..

और मूछों की कलफ कड़क होती जाती थी। रामू के तन-मन की कलफ धुल-धुल कर उतर गयी थी। वह कई बार बेआबरू हुआ था। रामू को लगा था कि उल्टे घूमते इस पहिये के साथ वह भी बंधा है।

उसने खुद देखा था कि गांव को शहर से जोड़ने वाली सड़क जब बनायी गयी थी तब बड़ी खुशियां मनायीं गयीं थी। वह तो खुद उस सड़क को बनाने वाला था। उसने तो गिट्टी तोड़ी थी। गिट्टी को तोड़ते हुए वह सोचता रहता था कि यह गिट्टी किसी दिन गांव को

शहर से जोड़ देगी। गांव को देश से जोड़ देगी। वह यह भी सोचता रहता था कि यह सड़क कभी कोई डॉक्टर इस गांव में लायेगी, कभी कोई मास्टर इस गांव में लायेगी और यह एक स्वस्थ और शिक्षित गांव बन जायेगा। मगर रामू का सपना अभी पूरा नहीं हुआ। गांव में कई लोग अनपढ़ ही रहे।

रामू को लगा था कि सड़क भी एक बीमारी बन गयी है। सड़क बनाने में रामू ने बहुत मन लगाकर काम किया था, लेकिन यह सड़क रामू को कहीं नहीं ले जा सकी थी। रामू जहां था वहीं ठहरा रह गया था।

रामू को लगा था कि सड़क तो आदमी और आदमी के बीच बननी चाहिये, लेकिन वैसा करना अकेले रामू के लिये संभव नहीं था। रामू ने इमरती से पूछा था- 'हम दिलों को दिलों से क्यों नहीं जोड़ सकते, एक मन से दूसरे मन के बीच कोई सड़क क्यों नहीं बना सकते?'

रामू को लगने लगा था कि उसकी मेहनत का लोग मनमाना लाभ ले रहे हैं। उसने तो कभी नहीं चाहा था कि गांव में उसी के द्वारा बनाई हुई सड़क कुछ फासले पैदा करेगी। उसको यह

विश्वास नहीं होता था। सड़क पर मोटरें तो सरपट दौड़ती हैं लेकिन गांव के जीवन में कोई रफ्तार नहीं आती। उसको तेज भागती भारी भरकम मोटरों की रफ्तार फालतू लगने लगी थी। उसको ऐसी रफ्तार का कोई मतलब समझ में नहीं आता था। वह अपनी मेहनत का कोई असर तलाश रहा था, कोई प्रभाव देखना चाहता था।

इस बीच उसे वे पुल भी दिखाई दिये थे जिनको बांधने में उसने मदद की थी। इन पुलों पर से लम्बी गाड़ियां हजारों यात्रियों को लेकर सरपट दौड़

जाती थीं लेकिन रामू को ये पुल किसी आदमी तक पहुंचाते नहीं दीखते थे। रामू ने पूछा था मैंने पुल क्यों बांधे ? मैंने सड़क क्यों बनायी ?

बिजली के खंभे रोपने में भी रामू ने मदद की थी। बिजली के ये खंभे हजारों किलोवाट बिजली इधर से उधर पहुंचाते थे लेकिन रामू के गांव में अभी तक बिजली की किल्लत थी। मन का अंधेरा भी रामू देख पा रहा था। रामू को मन का अंधेरा अच्छा नहीं लगता था। रामू चाहता था कि लोगों के दिल और दिमाग रोशन हो जाएं।

लेकिन यह रोशनी कहां से आयेगी ? कौन देगा ?

रामू तो सिर्फ सवाल कर रहा था कि सड़कें और पुल हमको जोड़ते क्यों नहीं ? खेत हमको भरपूर रोटी क्यों नहीं देते ? स्कूलें अच्छी पढ़ाई क्यों नहीं देतीं ? बच्चों को नया संसार कब देंगे हम ? नया समाज कब देंगे हम ?

रामू सिर्फ सवाल कर रहा था। सवाल करने का हक उसका अपना हक है।